चेतना विकास मूल्य शिक्षा

अभिभावक विद्यालय

चेतना विकास मूल्य शिक्षा

हिन्दी कविता

P.P - II

मूल्य: 144/-

चेतना विकास मूल्य शिक्षा संस्कार समिति द्वारा संचालित

अभिभावक विद्यालय

वी.आई.पी. रोड़, रायपुर, छ.ग.

छत्तीसगढ़ शासन द्वारा मान्यता प्राप्त

संरक्षण एवं मार्गदर्शन

श्री. ए. नागराज जी

प्रणेता

मध्यस्थ दर्शन (सह-अस्तित्ववाद)

श्री नर्मदांचल, भजनाश्रम, अमरकंटक

जिला - अनूपपुर (मध्यप्रदेश)

मानवीय शिक्षा शोध केन्द्र

अभ्युदय संस्थान, अछोटी, दुर्ग (छ.ग.)

पूर्व प्राथमिक पाठ्यक्रम - लेखकगण एवं अध्यापिकागण

अनामिका वरू, निताशा त्यागी, चानी चावड़ा, ज्योति पुराणिक, सुचित्रा श्रीवास्तव, मीना गाड़ोदिया, अनीता शाह, नीति जैन, पूनम साहू, ज्योति अग्रवाल, सुवर्णा शास्त्री, शालू अग्रवाल, गौरी साहू, ममता जैन, डॉली, नीतू शर्मा, सोनालिका अग्रवाल, संध्या शर्मा, पिंकी पारेख, रेखा अग्रवाल, नीधि महाजन, रोज़ी, गुरलीन, सुषमा अग्रवाल, रजनी अग्रवाल, पुनीता चावड़ा, प्रियंका शर्मा, वंदना शर्मा, उषा अग्रवाल, रचिता अग्रवाल, शीला गोपाला, रीतिका अग्रवाल, शीतल अग्रवाल, नवनीत जैन, श्रेया मिश्रा, दीप्ती चावड़ा

लोगो डिजाईन : सुषमा अग्रवाल
चित्रांकन : रंजीत भाटिया, राजेन्द्र ठाकुर
लेआउट डिजाईन : व्यू डिजाईन, रायपुर

चेतना विकास मूल्य शिक्षा

हिन्दी कविता

पी.पी. II

अभिभावक विद्यालय

नाम .....

पता .....

.....

वंदना

वंदना उनकी करें, जिनसे सुशोभित है धरा।
जिनसे है मानव का पथ, प्रकाश ज्योति से भरा।।

जिनसे दिशा हमको मिली, नित मानवीय मार्ग की।
पथ मिला निश्चित हमें थी, कामना जिस मार्ग की।।
कृतज्ञता से सौम्यता की, नित्य आयी निरंतरा।
जिनसे है मानव का पथ, प्रकाश ज्योति से भरा।।

जिनका है चिन्तन शुभ यही, कैसे हो मानव सुखमयी।
प्रेरणा से जिनकी है, मानव का जीवन सुखमयी।।
श्रद्धा समर्पित जिनसे आए, मानवीय परम्परा।
जिनसे है मानव का पथ, प्रकाश ज्योति से भरा।।

सबके सुख की कामना ले, रहती जिनकी कल्पना।
निकली जिनसे मानवीय पथ, हेतु निश्चित योजना।।
पूज्यता उन हेतु जिनसे, है सुसज्जित वसुन्धरा।
जिनसे है मानव का पथ, प्रकाश ज्योति से भरा।।

–प्रदीप पूरक, बिजनौर (उ.प्र.)

प्राक्कथन

मानवीय शिक्षा का प्राक्कथन एक आवश्यकता के रूप में हमें महसूस हुआ क्योंकि यह पाठ्यपुस्तिका का उपक्रम नर्सरी कक्षा से प्रस्तुत किया गया है। क्रम से परंपरागत होने तक सिलसिला बना ही रहेगा। सहअस्तित्व अपने स्वरूप में व्यापक वस्तु में ही सम्पूर्ण एक–एक वस्तु जैसे परमाणु, अणु, ग्रह, गोल, सौर व्यूह, आकाश गंगा, यह डूबी, भीगी, घिरी होने के आधार पर नियंत्रण, क्रियाशीलता और ऊर्जा सम्पन्नता प्रत्येक वस्तु में नित्य प्रमाण के रूप में देखा गया है। साथ में यह भी समझा गया है कि व्यापक वस्तु में समाहित सम्पूर्ण एक–एक वस्तुओं की अविभाज्यता नित्य वर्तमान है। यही सह–अस्तित्ववादी विश्व–दृष्टिकोण का मूल रूप है। ऐसे सहअस्तित्व नित्य प्रभावी रहना स्वाभाविक है।

सहअस्तित्व को ध्यान में रखते हुए प्रथम कक्षा से अर्थात् अक्षराभ्यास से चलकर शब्दों का अभ्यास और शब्दों के अभ्यास से अर्थ का अभ्यास, अर्थों के अभ्यास के तात्पर्य में हर शब्द किसी वस्तु का, क्रिया का अथवा फल–परिणाम का नाम है। ऐसा अर्थ इंगित होना ही शब्द से अर्थ समझा गया है, इसलिए अर्थबोध करने के उपक्रम में शिक्षा विधा को अध्ययन के रूप में प्रस्तुत करने का सौभाग्य प्रस्तुत हुआ। यह पठन विधि से अर्थ बोध तक पहुंचने का मार्ग प्रशस्त हुआ। इसे प्रस्तावित करना इसलिए आवश्यक समझा गया कि मानव सह–अस्तित्व विधि से ही समुदाय चेतना से मानव चेतना में संतुलित होना है। मानव चेतना का प्रयोजन, समाधान, समृद्धि, अभय, सहअस्तित्वपूर्वक जीने का प्रमाण है। इससे अखण्ड समाज सार्वभौम व्यवस्था की पहचान होना स्वाभाविक है।

यह तो सटीक है कि विगत विधि से जो पाठ–पठन का लक्ष्य था, उसे आगे पढ़ाने के जिन भी उपायों को खोजा गया है, वह सब सार्थक है, मूलतः मानवीय शिक्षा के अभाववश सामुदायिकता, मतभेद, साम, दाम, दण्ड, भेद, परस्पर समुदायों की निहित अतिशोधों का विश्वास प्रयोग हो चुका है। इन सब अभिशापों से मुक्ति पाने की आकांक्षा मानव में निहित होना भी पाया गया, इसलिए मानवीय शिक्षा का निश्चयीकरण आवश्यक समझा गया है। इसे क्रियान्वयन करने की क्रमविधि से प्रस्तुत किया।

मानवीय शिक्षा में मानव का अध्ययन प्रधान उद्देश्य है। इस उद्देश्य को सार्थक बनाने के क्रम में नर्सरी कक्षा से ही सूत्रपात रूप में मूल्य संबंधी और शरीर के अवयव संबंधी शब्दों का अधिकतम चयन किया गया है। साथ में परस्पर मानव संबंधों से संबंधित शब्दों का चयन किया गया है। इसे हर बालक अथवा किशोर आसानी से पहचान पायेगा। ऐसी हमारी स्वीकृति है। यह सार्थक और सफल होना पाया गया है। भविष्य में मूल्यांकन होता रहेगा। इस विधि से सर्वशुभ होने की कामना है।

ए. नागराज
प्रणेता एवं लेखक
मध्यस्थ दर्शन (सहअस्तित्ववाद)
श्री नर्मदांचल, भजनाश्रम, अमरकंटक
जिला अनूपपुर (मध्यप्रदेश)

लेखकीय

मध्यस्थ दर्शन (सह अस्तित्ववाद) के प्रणेता श्री ए. नागराज जी द्वारा हुए अनुसंधान में उन्हें सम्पूर्ण अस्तित्व, सहअस्तित्व सहज रूप में होना रहना अनुभव हुआ। जो "मध्यस्थ दर्शन" "सहअस्तित्व वाद" शास्त्र रूप में प्रस्तुत हुआ। इस अनुसंधान से शिक्षा और व्यवस्था विकल्प रूप में प्रस्तुत हुई है।

''मध्यस्थ दर्शन'' सह अस्तित्ववाद से निःसृत्त हुई "चेतना विकास मूल्य शिक्षा"

श्री ए. नागराज जी के मार्गदर्शन में चेतना विकास मूल्य शिक्षा, प्राथमिक विद्यालय का पाठ्यक्रम तैयार किया गया है। उनके अनुसार पांचवीं तक व्यवहारिक शिक्षा हो। व्यवहारिक शिक्षा के चार स्तंभ हैं :– संबोधन, सहयोग, आज्ञापालन और नियंत्रण।

बालक जन्म से सत्यवक्ता, न्याय एवं सही चाहने वाला होता है। माता–पिता–अध्यापक सही है, इसी विश्वास से बच्चा अपनी यात्रा शुरू करता है।

प्रत्येक बालक शोध में लगा ही रहता है। जिज्ञासु है, विचारशील है, कल्पनाशील है, समझने की असीम क्षमताओं सहित है।

बालक जिस परिवेश में रहता है उसी भाषा में समझना उसके लिए सरल होता है। समझना ही शिक्षा–संस्कार है।

तीन वर्ष का बालक जब विद्यालय आता है उसके पास भाषा कम भाव अधिक होते हैं। यही उसका खजाना है । इस उम्र में बच्चे माँ के सबसे करीब होते हैं। मूल्य आधारित शिक्षा इन्हीं संबंधों में निरंतरता लाती है, जैसे बच्चा माँ को जानता है तो ''अ–अम्मा'' कहने पर बच्चा अपने आप अम्मा की व्याख्या करने लगता है। अम्मा मुझे खाना खिलाती है, अम्मा मुझे सुलाती है, अम्मा मुझे प्यार करती है। घर जाकर अम्मा के गीत गाता है। माँ खुश होती है, अपनी ममता करती है। शिक्षक का आदर करने की शिक्षा देती हैं। शिक्षक पुनः "आ–आदर" "म–ममता" , "उ–उपकार" जैसे शब्दों का अर्थ बोध कराते हैं। यहाँ से शुरू होता है शिक्षा का मानवीयकरण जहाँ शिक्षक विद्यार्थी एवं अभिभावक मूल्यों से बंध जाते हैं।

भाषा सब कुछ नहीं पर बहुत कुछ है। भाषा जितनी सार्थक एवं सम्मानजनक होगी उतनी ही स्वस्थ मानसिकता का विकास होगा। यह जिम्मेदारी परिवार एवं विद्यालय दोनों की है।

मूल्य आधारित शिक्षा तभी सफल होगी जब माता–पिता एवं शिक्षक स्वयं समझदार, ईमानदार एवं जिम्मेदार होंगे।

पाँच वर्ष की आयु तक बालक–परिवार में माता–पिता के साथ तीन पीढ़ी के बीच रहकर अनुकरण–अनुसरणपूर्वक सीखें यहीं बालक के लिये सहज प्रक्रिया हैं परन्तु आज की व्यस्ततम जीवन शैली, अनन्तः इच्छाओं को पूरा करने की दौड़, अपने बालक को प्रतियोगिता की दूनिया में अव्वल देखने की कामना ने दो–दो वर्ष के बच्चों को भी घर से बाहर भेजने बाध्य किया है एवं शिक्षा को आज अग्रिम व्यवसाय के दर्जे पर ला खड़ा किया है।

अभिभावक विद्यालय एक शुभ शुरूआत है शिक्षा को व्यवसाय से मुक्त करने की, यहां अभिभावक ही अध्यापक है जो बिना प्रतिफल अपेक्षा अपने बच्चों के साथ–साथ आस–पास के अन्य बच्चों की शिक्षा एवं संस्कार एवं स्वास्थ्य की जिम्मेदारी स्वयंस्फूर्त वहन किये हैं।

चेतना विकास, मूल्य शिक्षा आधारिक पूर्व प्राथमिक पाठ्यक्रम की पुस्तिका प्रथम बार लिखी गई है अतः इसमें संशोधन एवं परिमार्जन की अपार संभावनाएं हैं। मानवीय शिक्षा शोध में लगे सभी से सतत् मार्गदर्शन की अपेक्षा है।

लेखकगण

नमन गीत

जन्म पाकर सेवा पाकर

खुश होता है मेरा मन

खुश होकर हाथ जोड़कर

अभिभावक को करूँ नमन

स्नेह पाकर और सहयोग पाकर

खुश होता है मेरा मन

खुश होकर हाथ जोड़कर

भाई बहन को करूँ नमन

पढ़ लिखकर ज्ञान पाकर

खुश होता है मेरा मन

खुश होकर हाथ जोड़कर

भाई बहन को करूँ नमन

पढ़ लिखकर ज्ञान पाकर

खुश होता है मेरा मन

खुश होकर हाथ जोड़कर

गुरूजनों को करूँ नमन।।

अभिवादन

अभिवादन मैं नित्य करूँ,
माताजी पिताजी को।
अभिवादन मैं नित्य करूँ,
भाईजी–बहनजी को।
अभिवादन मैं नित्य करूँ,
अध्यापिकाजी–अध्यापकजी को।
अभिवादन अवश्य करूँ मैं,
घर आये अतिथि को।।

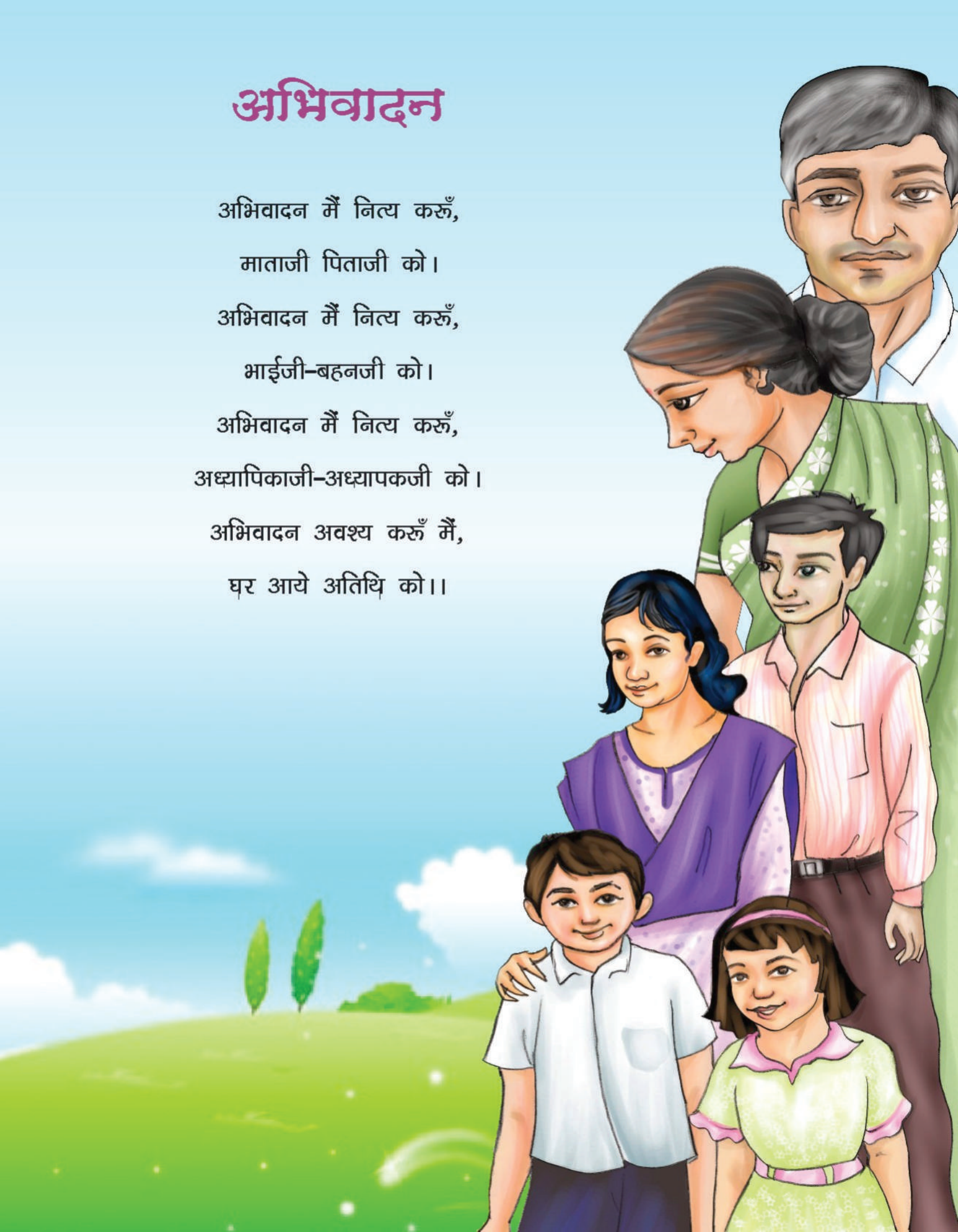

सार्थक संवाद

सम्बोधन

अध्यापिका जी – नमस्ते बेटा जी!

विद्यार्थी – नमस्ते अध्यापिका जी।

अध्यापिका जी – बेटाजी, हम सब सही संबोधन से **जी** और **आप** लगा कर ही बात करेंगे।

विद्यार्थी – अध्यापिका जी सम्बोधन क्या होता है।

अध्यापिका जी – बेटाजी अभी आपने मुझे क्या कहा

विद्यार्थी – अध्यापिका जी

अध्यापिका जी – बेटा जी यही सम्बोधन होता है।

– अभी मैंने आपको कैसे बुलाया?

विद्यार्थी – बेटा जी।

अध्यापिका जी – मैंने आपको बेटाजी कह कर सम्बोधन किया आपने मुझे अध्यापिका जी कह कर सम्बोधन किया ।

– अच्छा बताओ आप मनन बेटा जी को क्या कह कर बुलाते है?

विद्यार्थी – मनन भाई जी।

अध्यापिका जी – और रक्षा बेटा जी को।

विद्यार्थी – रक्षा बहन जी।

अध्यापिका जी – भाई जी, बहन जी ये क्या हुआ?

विद्यार्थी – सम्बोधन।

अध्यापिका जी – अच्छा बताओ सेवाराम भैया जी और अम्बिका बहन जी को आप क्या कह कर बुलाते हो?

विद्यार्थी – सेवाराम चाचा जी, अम्बिका मौसी जी।

अध्यापिका जी – चाचा जी और मौसी जी ये क्या हुआ।

विद्यार्थी – सम्बोधन।

अध्यापिका जी – हम सभी अध्यापिका जी एक दूसरे को किस सम्बोधन से बुलाते हैं?

विद्यार्थी – बहन जी।

अध्यापिका जी – आप नीलेश चाचा जी, शंकर चाचा जी कह कर बुलाते हैं हम भी उन्हें चाचा जी कहते है क्या?

विद्यार्थी – नहीं।

अध्यापिका जी – क्यों नहीं कहते?

विद्यार्थी – क्योंकि वो तो बड़े हैं।

अध्यापिका जी – बिलकुल ठीक क्योंकि वो हमारी उम्र के हैं इसलिए हम उन्हें भाई जी कहते हैं, जैसे आप सब एक उम्र के हैं,साथ साथ पढ़ते हैं एक दूसरे को भाई जी – बहन जी कहते हैं

अध्यापिका जी – अच्छा बताओ जैसे हम आपको बेटा जी कहते हैं तो क्या आप भी हमको बेटा जी बोलते हैं ?

विद्यार्थी – हा... हा... हा...।
ऐसा नहीं होता है।

अध्यापिका जी – आप सब मुझे अध्यापिका जी क्यों बोलते हैं?

विद्यार्थी – क्योंकि आप हमको पढ़ाते हैं।

अध्यापिका जी – Very Good बहुत अच्छा।

विद्यार्थी – अच्छा बताओ आप सब मेरा नाम लेकर मुझे बुलाएँगे तो कैसा लगेगा।

विद्यार्थी – ऐसा होता ही नहीं है।

अध्यापिका जी – क्यों नहीं होता?

विद्यार्थी – अच्छा नहीं लगता।

अध्यापिका जी – मैं आपको आपका नाम लेकर बुला सकती हूँ?

विद्यार्थी – हाँ आप बुला सकतीं हैं।

अध्यापिका जी – मैं क्यों नाम लेकर बुला सकती हूँ? जब आप मुझे नाम लेकर नहीं बुला सकते?

विद्यार्थी – आप बड़ी हैं ना इसलिए हमको तो घर में सब नाम लेकर ही बुलाते हैं

अध्यापिका जी – ऐसा क्या ! अच्छा एक बात सोच कर बताना कि यदि मैं कहुँ अनन्त इधर आओ या अनन्त बेटाजी इधर आइयें? आपको क्या अच्छा लगेगा।

विद्यार्थी – बेटाजी इधर आइये।

अध्यापिका जी – धवल बेटाजी अब आप बताइये।
धवल ठीक से बैठो या धवल बेटा जी ठीक से बैठेंगे?

विद्यार्थी – धवल बेटा जी ...

अध्यापिका जी – बढ़िया। अब मनन बेटाजी
मनन क्या कह रहे हैं या मनन बेटा जी आप क्या कह रहे हैं?

विद्यार्थी – मनन बेटा जी।

अध्यापिका जी – रक्षा बेटाजी आप बताइये।
रक्षा होम वर्क किया है रक्षा बेटा जी आपने होम वर्क किया है?

विद्यार्थी – रक्षा बेटा जी –

अध्यापिका जी – आप सब समझ गये सम्बोधन किसे कहते हैं।
हम सब का एक नाम होता है और हम सब एक दूसरे के कुछ लगते हैं सम्बोधन से हमें पता लगता है कि हमारा आपस में संबंध क्या है।

जैसे – 1. आपकी मम्मी जी का एक नाम है पर आप उन्हें मम्मीजी कहते हैं। इससे हम सब जान जाते हैं कि ये आपकी मम्मीजी हैं।

2. आप मुझे अध्यापिका जी कहते हैं मैं आपको बेटाजी कहती हूँ इससे सब जान जाते हैं कि मैं शिक्षक हूँ आप मेरे विद्यार्थी हैं।

इस मुद्रा से करूँ प्रणाम

इस मुद्रा से करूँ प्रणाम
सब हो जायें खुश, मैं हो जाऊं खुश
इस मुद्रा से गले मिलूँ
सब हो जायें खुश मैं हो जाऊं खुश
इस मुद्रा से मदद करूँ
सब हो जायें खुश मैं हो जाऊं खुश
इस मुद्रा से मैं लिखूं अच्छी बातें समझूं
इस मुद्रा से मैं पढ़ूँ अच्छी बातें जानू

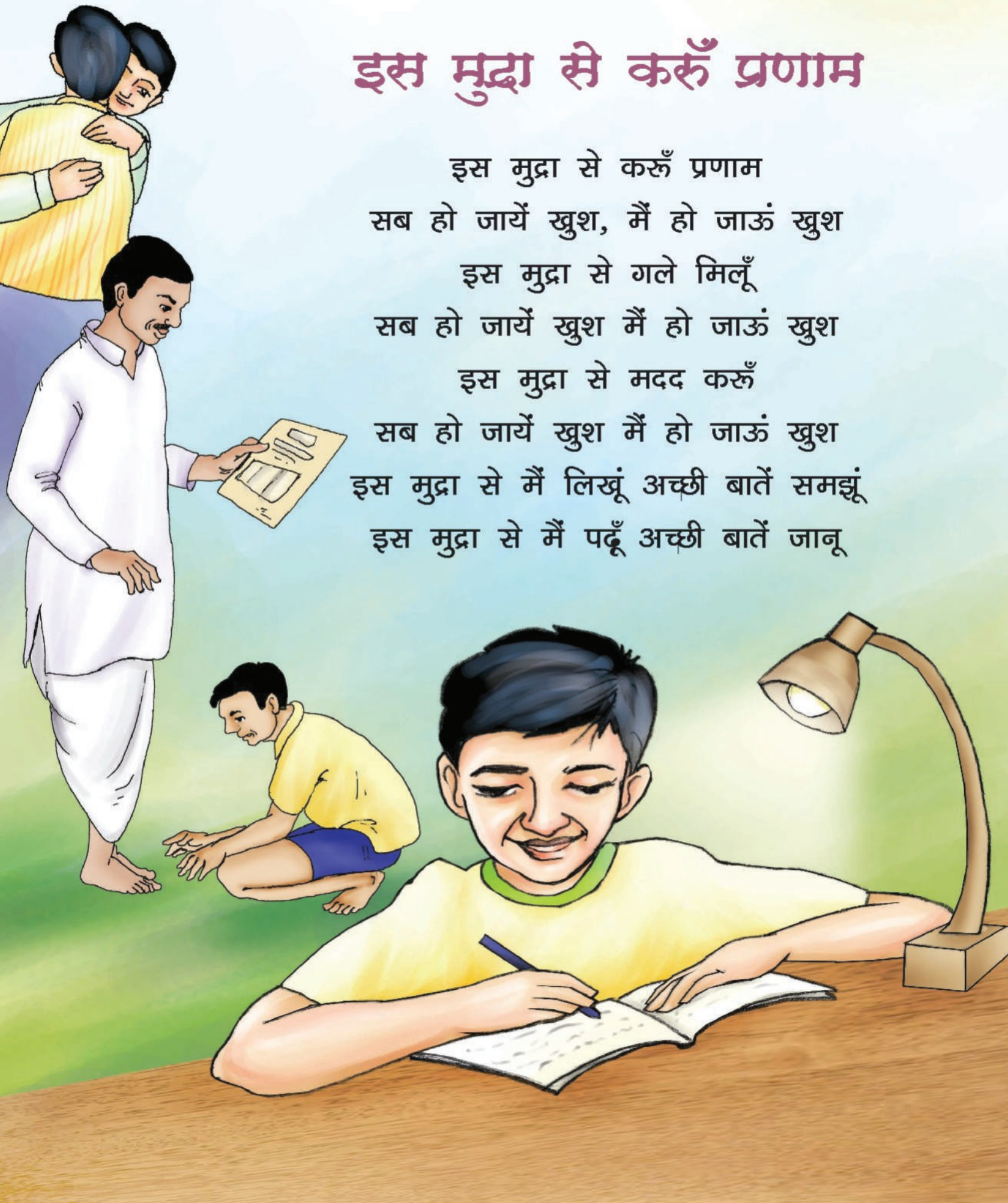

मैं चाहूँ सम्मान

मैं चाहूँ सम्मान सब चाहें सम्मान
मैं चाहूँ विश्वास सब चाहें विश्वास
मैं चाहूँ खुश रहना सब चाहें खुश रहना
इसलिए संबोधन करूँ और कहूँ मैं जी
इसलिए संबोधन करूँ और कहूँ मैं आप

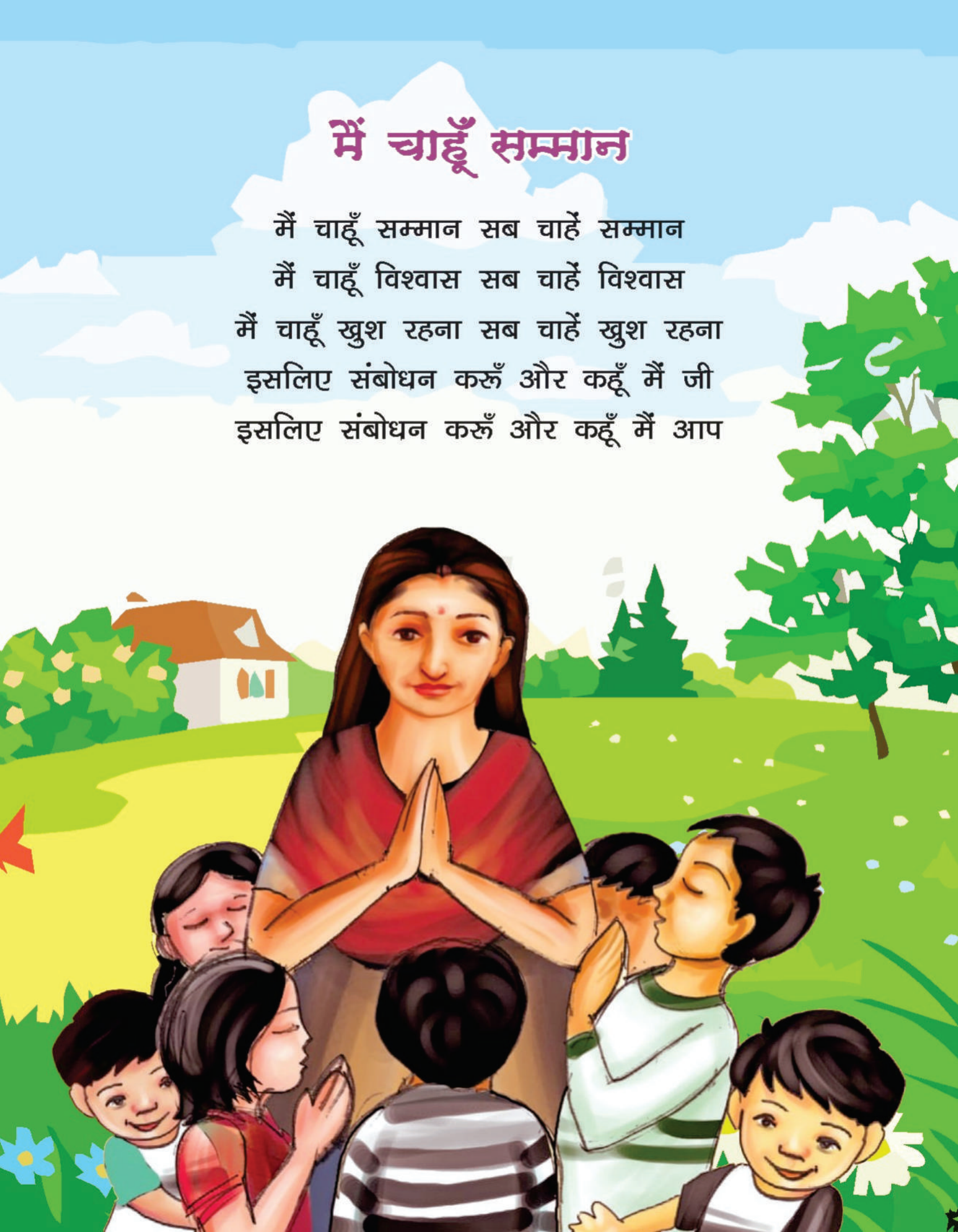

सहयोग

अध्यापिका जी – बेटाजी आप सभी का सम्बोधन बहुत अच्छा है

क्या आप सब घर जाकर परिवार में अड़ोस – पड़ोस में सभी के साथ आपसे छोटे हैं, बड़े हैं, हम उम्र हैं सभी के साथ सही सम्बोधन के साथ बात करते हैं?

विद्यार्थी – अध्यापिकाजी, करते हैं पर कभी – कभी छूट जाता है और कभी तो मैं जानबूझ कर भी नहीं बोलता।

अध्यापिका जी – अरे ऐसा कैसे होता है

विद्यार्थी – अध्यापिकाजी जब मेरे को गुस्सा आता है तो मैं सम्बोधन नहीं करती। आप भी नहीं बोलती जी भी नहीं लगाती।

अध्यापिका जी – और भी बच्चो के साथ ऐसा होता है क्या ?

विद्यार्थी – 1. जी अध्यापिकाजी, मैं भी गुस्सा आने पर ठीक से बातें नहीं करता

2. अध्यापिकाजी, बार–बार बोलने पर भी जब कोई मेरी बात नहीं सुनता तब मैं चिल्लाकर बोलती हूँ उससे सम्बोधन बिगड़ जाता है।

अध्यापिका जी – आपको कब अच्छा लगता है जब अच्छे से बात करते हैं या जब चिल्ला कर बात करते हैं।

विद्यार्थी – जब अच्छे से बात करते हैं।

अध्यापिका जी – बेटाजी आज मैं आपको बताती हूँ कि हमारा सम्बोधन क्यों बिगड़ता है

बेटाजी आप सब भाईजी, बहनजी साथ–साथ खुश होकर खेलो यही एक–दूसरे का सहयोग है।

जब–जब हम बिना लड़ाई–झगड़े के खेलते हैं, खुश रहते हैं, हमारा संबोधन भी नहीं बिगड़ता इतना ही तो करना है।

अध्यापिका जी – बताओ कौन–कौन बिना लड़ाई–झगड़ें के खेलना चाहता है

अध्यापिका जी – अरे वाह। सभी बच्चें

अध्यापिका जी – आप सब मुझे बताओ कि आप लोग के बीच लड़ाई कब–कब होती है और क्यों होती है?

विद्यार्थी – 1. अध्यापिकाजी, मैं जो खेल बोलती हूँ वे कभी नहीं खेलते?

2. मैं सबका कहना मानती हूँ मेरा कोई नहीं मानता

3. हमेशा, मुझे ही दाम देना पड़ता है।

4. अध्यापिकाजी मैं बहुत जल्दी आउट हो जाती हूँ, मैं कहती हूँ मुझे और खेलना है तो नहीं मानते

5. अध्यापिकाजी एक ही खेल खेलते हैं मैं बोर हो जाता हूँ।

6. सभी बहनजी मिलकर लड़कियों वाले खेल खेलते हैं हम दोनों भाई जी अकेले पड़ जाते हैं।

7. अध्यापिकाजी, हमें दौड़ने वाला खेल नहीं खेलना रहता , भाईजी हमेशा दौड़ने वाला खेल बोलते है

अध्यापिका जी – अच्छा अब मैं आपको आप सबकी शिकायतों का एक उपाय बताती हूँ उसे अगली बार जब खेलों प्रयोग करके देखना।

विद्यार्थी – जी अध्यापिकाजी

अध्यापिका जी – अभी हम सब अपनी बात मनवाना चाहते हैं मेरे भाईजी – बहनजी क्या चाहते हैं वो बिलकुल नहीं सोचते अब अगली बार आप अपने भाईजी बहनजी की बात सुनो और खेलो।

– आज अभी आप सब एक निर्णय लो कि हम सबको खुश होकर खेलना है, उसके लिए एक दूसरे का कहना मानना है फिर मुझे बताना कि आप सबका संबोधन कैसा रहा।

अध्यापिका जी – ठीक है। नमस्ते।

विद्यार्थी – ठीक है। अध्यापिकाजी नमस्ते।

ध्यान हमारा हर पल रखते

ध्यान हमारा रखते जी
प्यार हमको करते जी

मधुर-मधुर अच्छी भाषा से
बोलना सिखलाते जी

माताजी- पिताजी सबके
माताजी- पिताजी

खेल है खिलाते जी
भोजन भी कराते जी

जीना हो कैसे बढ़िया
व्यवहार हैं सिखलाते जी

माताजी– पिताजी सबके
माताजी– पिताजी

माताजी को देखूँ

माताजी को देखूं मैं,
समझाती वो समझूं मैं,
सम्बोधन करना है बताती,
सहयोग करना है सिखाती,
सेवा करना भी सिखाती,
ऐसा ही कर पाऊँ मैं,
उनके जैसा बन जाऊँ मैं।

विद्यालय

आओ बच्चों मिलकर समझें
विद्यालय को हम सब जानें

जिज्ञासा को लेकर आते
विद्यार्थी हैं हम कहलाते
गुरूजन हैं हमको समझाते
सही दिशा हमको बतलाते

विद्यालय में अध्ययन कराते
अध्यापक हैं वो कहलाते
घर पर हमको जो समझाते
अभिभावक हैं वो कहलाते

आओ बच्चों मिलकर समझें
विद्यालय को हम सब जाने

सार्थक संवाद

उपकार

अध्यापिका जी – नमस्ते बच्चों कैसे हो आप सब खुश–खुश विद्यालय आये हैं।

बालक – जी अध्यापिकाजी, नमस्ते अध्यापिका जी।

बालक – आज मैं पूरा होमवर्क लिख कर लाया हूँ।

अध्यापिका जी – Very good बहुत सुन्दर लिखा है।
किसने कराया?

बालक – अपने आप किया है।

अध्यापिका जी – अच्छा, आपने किसी से सहयोग नहीं लिया, इसका मतलब है के आप सीख गये हैं।

अध्यापिका जी – आपको लिखना किसने सिखाया है?

बालक – अध्यापिकाजी ने।

अध्यापिका जी – और घर पर किसने सहयोग किया।

बालक – मम्माजी ने।

अध्यापिका जी – Very good (बहुत अच्छा) बेटा जी बस बच्चों यही ध्यान रखने की बात है कि
विद्यालय में अध्यापिका जी ने पढ़ना–लिखना सिखाया, अच्छी–अच्छी बात सिखाई,
घर में मम्माजी ने पापाजी ने खाना–पीना, चलना–बोलना सिखाया।

अध्यापिका जी – बेटा जी आपके छोटे भाई जी है न घर में

बालक – जी अध्यापिकाजी

अध्यापिका जी – भाई जी खाना खुद खाते हैं।

बालक – मम्माजी खिलाती है।

अध्यापिका जी – सु–सु खुद साफ करते हैं।

बालक – मम्मा जी कराती है।

अध्यापिका जी – अपने आप नहाते हैं।

अध्यापिका जी – नहीं।

बालक – कपड़े पहन पाते है?

बालक – नहीं।

अध्यापिका जी – कंघी कर लेते हैं?

बालक – मम्माजी तैयार करती हैं।

अध्यापिका जी – उनको लिखना आता है?

बालक – अध्यापिकाजी अगले साल से वे भी विद्यालय आयेंगे।

अध्यापिका जी – बच्चों हमारी इतनी बातचीत से आपको समझ में आ गया होगा कि जब हम बहुत छोटे होते हैं तब हमको कुछ नहीं आता।
मम्माजी हर दिन बार–बार आपका सब काम करती हैं तब मम्माजी को देख–देख कर आप सीखते हैं।
वैसे ही विद्यालय में अध्यापिकाजी बार–बार आपको अक्षर की पहचान कराती है फिर बार–बार लिखना आ जाता है।

बालक – जी।

बालक – अध्यापिकाजी आपको तो सब आता है?

अध्यापिका जी – अब आता है न जब मैं भी आप लोगों के जैसे छोटी थी तब मेरे मम्मीजी–पापाजी ने मुझे चलना–बोलना, खाना–पीना, उठना–बैठना सिखाया।
विद्यालय में मैं भी आप लोग के जैसे–अध्यापिकाजी से लिखना–पढ़ना सीखी।

– ये मैं कभी नहीं भूलूंगी । आप सब भी हमेशा याद रखना।

बालक – जी अध्यापिकाजी कभी नहीं भूलेंगे।

अध्यापिका जी – बहुत बढ़िया यदि हमको ये सब बातें याद रहेगी तो हम जब कोई भी काम खुद करना शुरू करेंगे तब हम क्या बोलेंगे.....

– देखो अध्यापिकाजी मैं लिखना सीख गया अब मैं अपने–आप कर सकता हूं। और जिन्होंने सिखाया उनको बोलेंगे Thank you अध्यापिका जी
Thank you मम्मा जी
Thank you पापा जी

बालक – मैं जाकर बोलूंगा Thank you.

बालक – मैं भी बोलूंगी।

बालक – हम भी बोलेंगे।

अध्यापिका जी – आप सबने मेरी बात ध्यान से सुनी इसके लिए Thank you बेटा जी।

अध्यापिका जी अध्यापक जी

अध्यापिका जी अध्यापक जी
अध्ययन हैं कराते जी
बच्चों की जिज्ञासाओं को
प्यार से हैं पूरा करते
सही बात को ही पढ़ाते
सच्चाई को ही लिखाते
ध्यान हमारा रखते जी

अध्यापिका जी अध्यापक जी
अध्ययन हैं कराते जी

संबोधन को बतलाते हैं
भाषा को भी गढ़ते हैं
साथ-साथ हम रहना सीखें
खुशहाली से जीना सीखें
अभ्यास यही कराते हैं
अध्यापिकाजी अध्यापक जी
अध्ययन हैं कराते जी

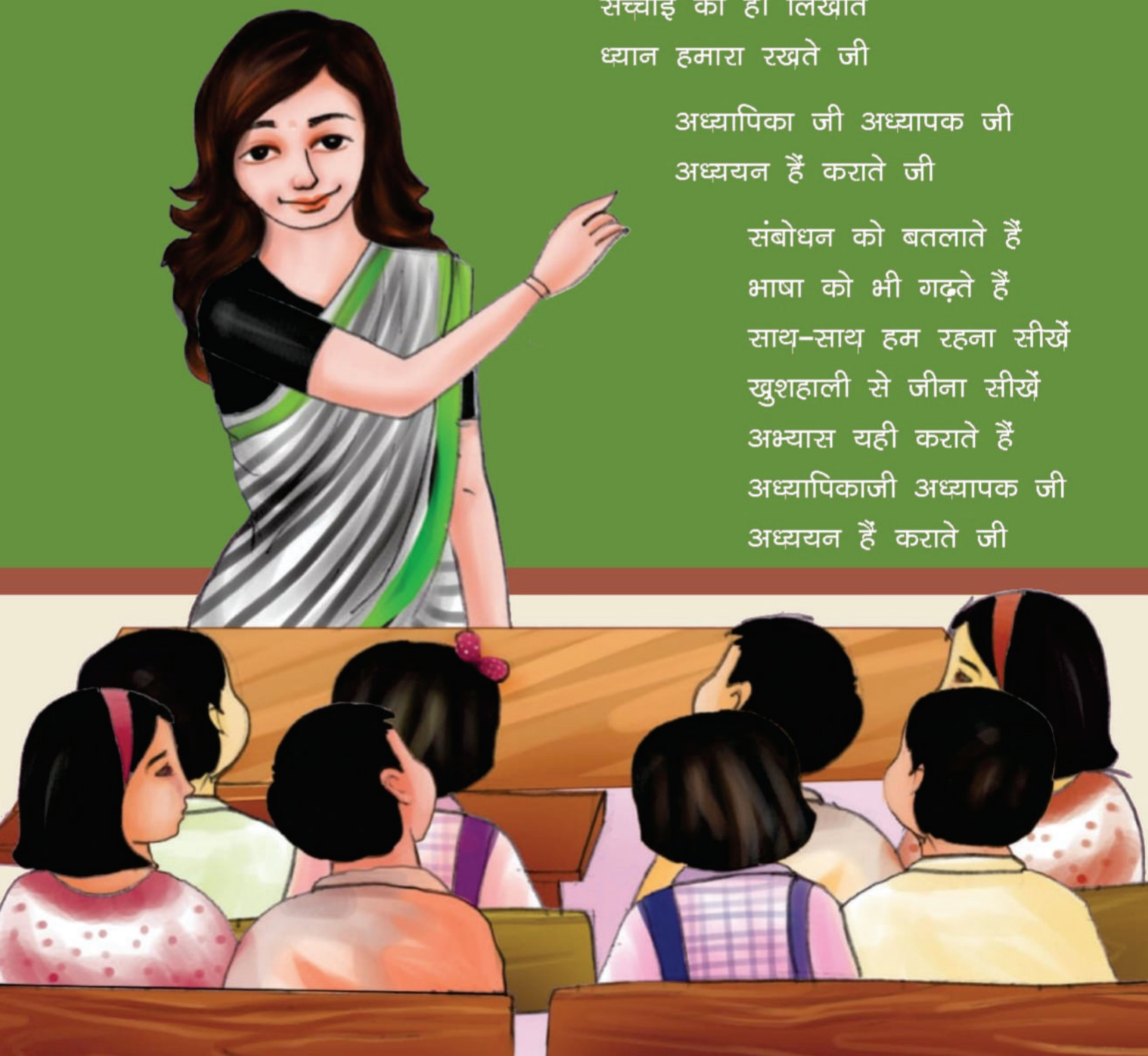

सार्थक संवाद

मेरी आवश्यकता

अध्यापिकाजी – नमस्ते बच्चों कैसे हो आप सब

बालक – नमस्ते अध्यापिकाजी अच्छे है।

अध्यापिकाजी – बेटाजी आपको सर्दी हो गई है, देखो नाक बह रही है।

आपकी बैग मे रूमाल नही है।

बालक – मम्मीजी ने नही दिया

अध्यापिकाजी – कोइ बात नही, विद्यालय में है मैं साफ कर देती हूँ। मम्मी जी को सुबह–सुबह कितने काम होते है वो भूल गई होगी।

कोई बात नही आप घर जाकर मम्माजी को मत कहना कि आप रूमाल देना भूल गये थे।

बालक – क्यों अध्यापिकाजी, क्यो नहीं बोलेंगे।

अध्यापिकाजी – बेटाजी मम्माजी इतन कुछ करते है आपके लिए, वो बताना पर कभी–कभी कुछ करना भूल जाये तो सोचना कोई बात नही मम्मा भी तो थक जाती है।

बालक – हाँ मम्माजी दिन भर काम करते है।

अध्यापिकाजी – तो क्या आप सहयोग करना चाहते है?

बालक – जी अध्यापिकाजी

अध्यापिकाजी – आप सब टिफिन रोज लाते हो ?

बालक – जी अध्यापिकाजी

अध्यापिकाजी – कभी नही भूलते ?

बालक – नही, मम्मी देती है।

अध्यापिकाजी – क्यो नही भूलते

बालक – मुझे भूख लगती है।

अध्यापिकाजी – ठीक बात है आपको पता है कि भूख लगेगी तब टिफिन चाहिए इसलिए हम नहीं भूलने मम्माजी भी नहीं भूलते उनको पता है आपकी आवश्यकता।

अध्यापिकाजी – अब ये बताओ कि सर्दी किसको हुई है?

बालक – मुझे

अध्यापिकाजी – तो रूमाल किसकी आवश्यकता है।

बालक – मेरी

अध्यापिकाजी – Good बेटाजी जैसे भूख लगने पर भोजन आपकी आवश्यकता है प्यास लगने पर पानी आपकी आवश्यकता है वैसे ही सर्दी होने पर रूमाल आपकी आवश्यकता है। है न!

बालक – जी अध्यापिका जी

अध्यापिकाजी – कौन बतायेगा की यदि मेरी आवश्यकता है तो मुझे क्या करना होगा

बालक – याद रखना होगा रूमाल बैग मे है या नही

अध्यापिकाजी – Very Good बेटाजी बहुत समझदार बच्चे हो आप सब

बालक – हुम्म

अध्यापिकाजी – सुबह – सुबह मम्माजी को ढेर सारे काम होते है

1) आपको उठाना

2) नहलाना

3) नाश्ता बनाना

4) बैग तैयार करना

5) पानी बॉटल में भरना रूमाल

6) रूमाल जूता चप्पल सब याद करना

बताओ इसमें से आप क्या–क्या सहयोग कर सकते हो'

बालक – क्या–क्या

अध्यापिकाजी – सोचो.....सोचा ध्यान दो

बालक – आप बताओ अध्यापिकाजी

अध्यापिकाजी – चलो मैं इसमें आपकी मदद करती हूं।

1. आप रात को ही अपना बैग तैयार कर सकते हो'

2. जो भी वस्तु आपके बैग से निकल गई है या इधर–उधर पड़ी है सबको एकत्र कर सकते हो'

3. कॉपी, पुस्तक, पैन्सिल, रबर, स्लेट पोछने का कपड़ा, रूमाल, एक जोड़ी कपड़ा अपना सब सामान सोने से पहले बैग में डाल सकते हो।

ये बहुत बड़ा सहयोग होगा मम्मा जी को

बालक – ये अब मैं करूंगा

बालिका – मैं भी कर सकती हूं

बालक – मेरी मम्माजी बोलती है मैं कर दूंगी तुमसे नही होगा

अध्यापिकाजी – आप अपनी मम्माजी से कहना कि अब से मैं अपने काम खुद करने का अभ्यास करूंगा।

अध्यापिकाजी – कौन–कौन करेगा हाथ उठाओ

बालक – सबने हाथ उठाये अध्यापिकाजी

अध्यापिकाजी – अच्छे बच्चे हो आप सब

इस वर्ष P.P.-2 में आप सब खुद से 5 काम करोगे

1. अपनी तरफ से नमस्ते करना।

2. जूते चप्पल लाईन से रखना।

3. अपना बैग सोन से पहले तैयार करना।

4. हाथ धोकर भोजन करना।

भोजन करके अपना बरतन खुद उठाकर रखना।

ई आ, ई आ ओ

ई आ ई आ ओ, ई आ ई आ ओ
आओ आओ भाईजी
खेले हम साथ, खेले हम साथ
ई आ ई आ ओ, ई आ ई आ ओ
आओ आओ बहनजी
नृत्य करें साथ, नृत्य करें साथ
ई आ ई आ ओ, ई आ ई आ ओ
आओ आओ भाइजी
खाएं हम साथ, खाएं हम साथ
ई आ ई आ ओ, ई आ ई आ ओ
आओ आओ बहनजी
पढ़े हम साथ, पढ़े हम साथ
ई आ ई आ ओ, ई आ ई आ ओ

छोटे-छोटे नियम

छोटे-छोटे नियमों को जब
हम जीने में ले आते
कर पायेंगे काम बड़ा तब
ध्यान रहे ये छोटी बातें।

पहले अपने आप को देखें
दाँत साफ, नाखून है छोटे
धुला है मुख और धुली हैं आँखें
कंघी से हैं बाल समेटे।

फिर हम अपने कपड़े देखे
साफ हो आगे, साफ हो पीछे
साफ हो बस्ता, साफ हो बोतल
साफ हो हाथ आगे पीछे।

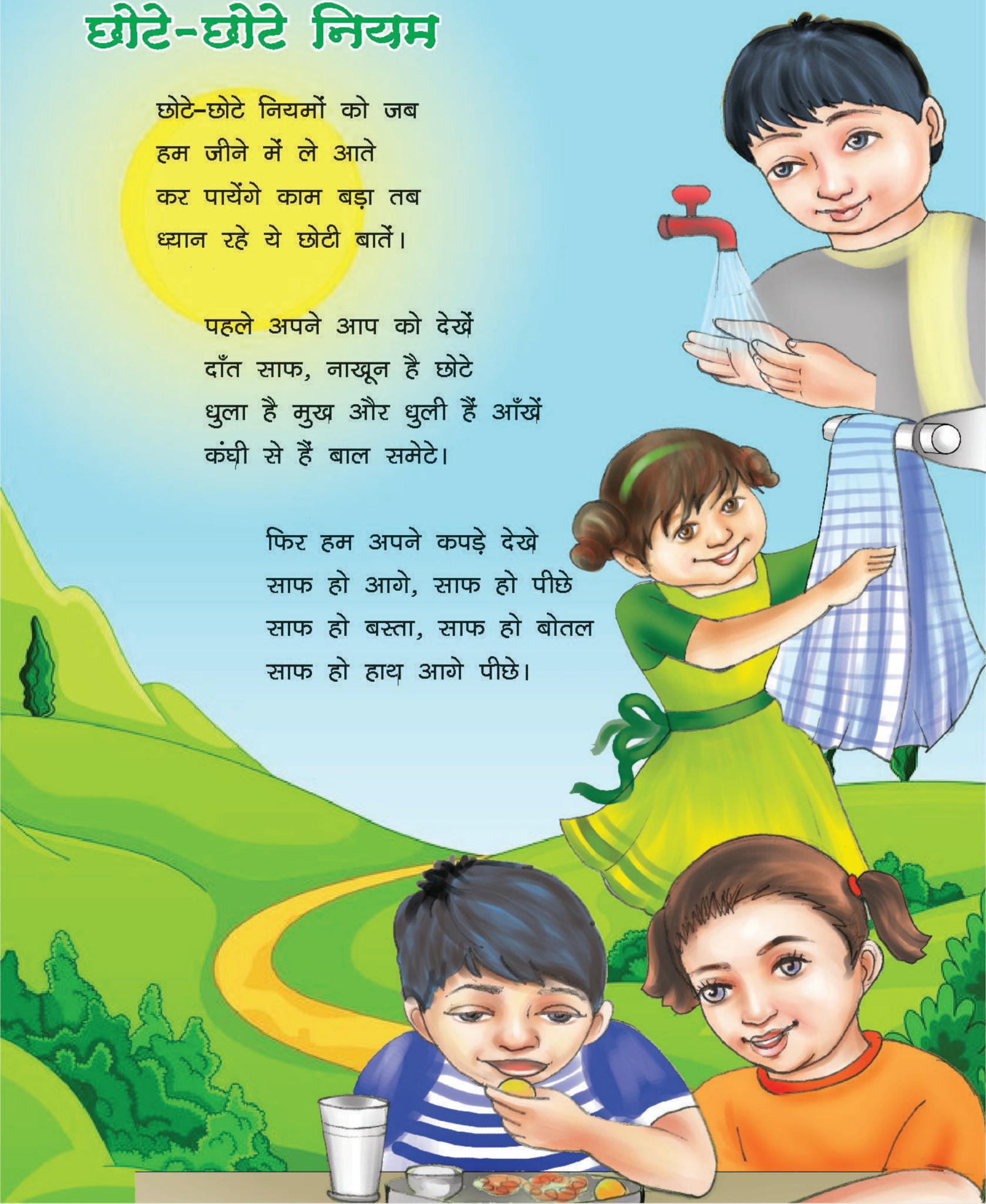

हवा

हवा चली हवा चली
कैसे पता हवा चली

पत्ते हिले तो हवा चली
धूल उड़ी तो हवा चली
ऐसे पता हवा चली
हवा चली हवा चली

हवा चली तो ठंड लगी
गर्मी हुई तो हवा चली
ऐसे पता हवा चली
हवा चली हवा चली

बाल उड़े तो हवा चली
पसीना सूखा तो हवा चली
ऐसे पता हवा चली
हवा चली हवा चली

ऋतु आई

ऋतु आई है वर्षा की
वर्षा की वर्षा की
बादल को गरजते देखा
बिजली को चमकते देखा
आवाज करते मेढ़क देखा
पानी को बरसते देखा
ऋतु आई है वर्षा की
वर्षा की वर्षा की
तालाबों में पानी देखा
नदियों को उफनते देखा
खेतों में हरियाली देखी
पेड़ों पर हरियाली देखी
ऋतु आई है वर्षा की
वर्षा की वर्षा की

सार्थक संवाद

स्वाद की पहचान

अध्यापिका जी	–	नमस्ते बच्चों कैसे हो खुश हो स्वस्थ हो सबने काढ़ा पिया
बालक	–	अध्यापिकाजी अजवाइन का काढ़ा तीखा लगता है।
बालक	–	नहीं – नहीं मीठा था।
बालक	–	तीखा था न
बालक	–	मीठा था
अध्यापिका जी	–	अच्छा चलो आज हम कितने प्रकार के स्वाद होते है उसे समझते है।
अध्यापिकाजी	–	अजवाइन के काढ़ा में दो चीज डलती है अजवाइन और गुड़
	–	बताओ इसमें गुड़ का स्वाद कैसा रहता है।
बालक	–	मीठा
अध्यापिकाजी	–	सबको मीठा लगता है गुड़
बालक	–	जी अध्यापिका जी मीठा – मीठा गुड़
अध्यापिकाजी	–	अजवाइन का स्वाद थोड़ा तीखा थोड़ा नमकीन रहता है इसलिए मौसीजी उसमें गुड़ मिलाते हैं।
बालक	–	अध्यापिका जी मुझे छुट्टी के समय नींबू पानी मिलता है न वो अच्छा लगता है।
अध्यापिकाजी	–	क्यों अच्छा लगता है।
बालक	–	खट्टा – मीठा होता है।
अध्यापिकाजी	–	नींबू पानी खट्टा मीठा कैसे बनता है।
बालक	–	नींबू खट्टा होता है। उसमें मौसीजी शक्कर डालते है।
अध्यापिकाजी	–	शक्कर का स्वाद कैसा रहता है।
बालक	–	मीठा – मीठा
अध्यापिकाजी	–	बहुत अच्छा आपको पता है कि नींबू का स्वाद खट्टा और शक्कर का स्वाद मीठा
अध्यापिकाजी	–	अच्छा बताओ जैसे नींबू खट्टा लगता है वैसे ही और कौन – कौन सी चीज आपको खट्टी लगती है।
बालक	–	इमली
बालक	–	खट्टा आम
बालक	–	खट्टी भाजी
अध्यापिकाजी	–	बहुत अच्छा, बहुत बढ़िया
	–	और मीठी चीज कौन – कौन सी है।

बालक	–	रसगुल्ला
	–	मिठाई
	–	खीर
	–	पेड़ा
	–	लड्डू
अध्यापिकाजी	–	आप सबने जितनी चीजे बताई वो मीठी होती है या मीठी बनाई जाती है।
बालक	–	बनाते है।
अध्यापिकाजी	–	कैसे
बालक	–	पता नहीं
अध्यापिकाजी	–	शक्कर मिला कर
बालक	–	हां – हां
अध्यापिकाजी	–	अब कुछ ऐसी मीठी चीज बताओं जिसमें गुड़ या शक्कर नहीं डालते फिर भी वो मीठी होती है।
बालक	–	आम
बालक	–	केला
बालक	–	सेब
बालक	–	अनार
बालक	–	कलिन्दर
बालक	–	अंगूर
अध्यापिकाजी	–	बहुत बढ़िया good और.....
बालक	–	बस
अध्यापिकाजी	–	किशमिश, खजूर, शहर.....और मम्मीजी से पूछकर आना ठीक है।
अध्यापिकाजी	–	और कौन सा स्वाद होता है
बालक	–	मिर्ची
अध्यापिकाजी	–	हां बेटाजी उसे तीखा स्वाद कहते हैं। मिर्ची कैसी होती है–
बालक	–	तीखी–तीखी

अध्यापिकाजी	–	और स्वाद बताओ करेला कौन खाता है
बालक	–	मैं नही खाता
बालक	–	मैं भी नही
बालक	–	मैं खाती हूं अध्यापिकाजी
अध्यापिकाजी	–	कैसा स्वाद है
बालक	–	कडुवा
अध्यापिकाजी	–	बहुत अच्छा एक स्वाद है कडुवा
बालक	–	मैं सुबह नीम की पत्ती खाती है वो भी कड़वी होती है।
अध्यापिकाजी	–	अब बस एक स्वाद बचा है बताओ। हमारे विद्यालय में उसका पेड़ है हॉल के आस पास सब ढूंढ – ढूंढ कर खाते हो। गोल – गोल, छोटा – छोटा, हरा – हरा
बालक	–	आंवला अध्यापिका जी
अध्यापिकाजी	–	सही पहचाना बेटा जी आंवला
अध्यापिकाजी	–	बताओ आंवला का स्वाद कैसा होता है
बालक	–	खट्टा
बालक	–	तीखा
बालक	–	उसके ऊपर पानी पीने से मीठा लगता है।
अध्यापिकाजी	–	बेटा जी आंवला न खट्टा होता है न मीठा, न नमकीन न तीखा न कडुवा होता है। आंवला का स्वाद कसैला होता है।
अध्यापिकाजी	–	हम जीभ से छः प्रकार का स्वाद लेते है खट्टा – मीठा, तीखा, कडुवा, नमकीन, कसैला

खूब बढ़िया क्लास हुई आज तो आप सब के लिए
ताली बजानी चाहिए
चलो बजाते है।

सार्थक संवाद

आज्ञापालन

अध्यापिका जी – नमस्ते बेटाजी आप सब कैसे है, मन खुश है, शरीर स्वस्थ है

विद्यार्थी – जी अध्यापिकाजी

अध्यापिका जी – अदिति बेटाजी आपको देखकर लगता है कि थोड़ा परेशान हो क्या बात है

अदिति – अध्यापिकाजी पेट दुख रहा है

अध्यापिका जी – पेट में दर्द है, आपके लिए अजवाइन का काढ़ा बनवाते है आप काढ़ा पी लेना, थोड़ा आराम करना ठीक हो जायेगा

विद्यार्थी – अध्यापिकाजी , मैं कॉपी लाना भूल गई

अध्यापिका जी – कैसे भूल गये बेटाजी

विद्यार्थी – अध्यापिकाजी , कल मैं होमवर्क की फिर खेलने चली गई सुबह जल्दी –जल्दी में रह गई

अध्यापिका जी – बेटाजी , आप सबसे विद्यालय में सभी अध्यापिकाजी ये बात समझाती है कि अपनी कॉपी , पेन्सिल , रबर सब वस्तु को ध्यान से रखो

घर में मम्मीजी समझाती है कि बेटाजी अपना बैग , बॉटल , जूते,चप्पल,ध्यान से रखो बार – बार, बार – बार बालती है क्यूँ ?

विद्यार्थी – नहीं तो हमारी चीजें नहीं मिलती और हमको परेशानी होती है

अध्यापिका जी – एकदम ठीक बेटाजी जब हमारी वस्तु सही जगह पर सुरक्षित नहीं होती तब हमें समय पर मिलती नहीं है , अव्यवस्था हो जाती है

अध्यापिका जी – बेटाजी , अभी तक आप सबने समझा संबोधन करना है, सहयोग करना है आज हम समझेंगे आज्ञापालन

अध्यापिका जी – माता–पिता और अध्यापकजी का कहना सुनना , मानना और वैसा ही करने से बच्चे सुखी और स्वस्थ्य होते है

जैसे –१. मम्मीजी आपसे कहती है बेटाजी ये मत खाना, ये वस्तु आपके शरीर के लिए ठीक नहीं है क्योंकि मम्मीजी तो आपके शरीर के बारे में सब जानती है

२. बेटाजी आप इतनी देर खेल कर वापस आ जाना नहीं तो थक जाओगे

हम कभी समय पर वापस आ जाते है कभी नहीं आते

३. मम्मीजी आपसे कहती बेटाजी अपनी चीजो को जगह पर रखो नहीं तो आपको मिलेगी नहीं

आप कभी रखते हो, कभी नहीं रखते

अध्यापिका जी – क्या ऐसा होता है

विद्यार्थी – जी अध्यापिकाजी , ऐसा ही होता है

अध्यापिका जी – ठीक है तो अब आप सब इस बात पर ध्यान देकर मुझे बताना कि जब – जब अपने मम्मीजी का कहना माना तब क्या हुआ और जब – जब नहीं माना तब क्या हुआ
ठीक है यही आज का होमवर्क है

अध्यापिका जी – नमस्ते बेटाजी Good Morning

विद्यार्थी – नमस्ते, Good Morning अध्यापिकाजी

विद्यार्थी – अध्यापिकाजी कल मैंने घर जाकर अपनी सभी चीजे जगह पर रखी थी मम्मीजी खुश हो गयी थी

अध्यापिका जी – Very Good बेटाजी यही तो सही जीना कहलाता है कि हम भी खुश हो हमारे अपने भी खुश हो और हमारी वस्तु भी सुरक्षित हो

विद्यार्थी – अध्यापिकाजी मैं भी कल ध्यान देकर कहना मान रही थी , मम्मीजी ने कहा बेटाजी बहुत देर हो गयी है अब टीवी बंद करो मुझे आपकी बात याद आगयी
तो मैंने कहा जी मम्मीजी बस 2 मिनिट में बंद करती हूँ और मैंने बंद कर दिया मम्मीजी खुश हो गये

विद्यार्थी – अध्यापिकाजी कल आपने कहा था काढा पीने, मम्मीजी भी बोलती है हमेशा पर मै नहीं बोल देती हूँ पर आज जब मम्मीजी बोले मैं तुरन्त हाँ बोली
मम्मीजी खुश हो गए बोले कि अरे वाह

अध्यापिका जी – बहुत बढ़िया बच्चो इस पूरे सप्ताह आप सब इस अभ्यास को करना

– आप सबने मेरा कहना माना और होमवर्क पूरा किया यही तो आज्ञापालन है और आप सब ने अच्छी बात को सुना उसके लिए आप सभी का धन्यवाद। नमस्ते बेटा जी...